एक बहन का पत्र एक भाई के नाम

मेरे प्रिय भाई .....

परमात्म मुखारबिन्द से अनेक विशेषताओं से विभूषित, अनेक गुणों एवं अनुभवों से संपंन, शक्ति का पर्याय समझ आपसे आज कुछ दिल की भावनाएं जो बीच–बीच में ज्वार–भांटा की तरह मन के पर्दे पर बार–बार आ जाती हैं वह अभिव्यक्त करना चाहते हैं ।

मेरे भाई जब भी हम कभी बाहर निकलते हैं या अपने आस–पास देखते हैं, या रोज के समाचार पत्र में मोटे– मोटे अक्षरों में छपी मन को झकझोरने वाली खबरें जब भी पढ़ते हैं, तो रूह कॉप उठती हैं, दिल दहलाती ये बातें हलक में ही अटक जाती हैं, जो सुरसा की तरह दिन–दूनी रात सौ गुनी अपना आकार बढ़ाती जा रही हैं। जो बहनें सारा जीवन अपना स्नेह सबसे बचाकर सिर्फ अपने भाइयों को नजीर करती हैं, सारी जिन्दगी उनकी लम्बी उम्र की दुआयें मॉगती आयीं, भाइयों के एक इशारे पर पर सर्वस्व न्योछस्वर कर गर्व महसूस करने वाली बहनों को किसी के भाइयों के कारण घुट–घुट कर जीना पड़े ! तो क्या आपके मन के मकान में कमजोरी के किरायेदारों ने कब्जा कर रखा है, या आपकी नजरों को स्वार्थ के मोतियाबिन्द ने चपेट में ले लिया है, या आपका दिल आलस्य के आधिपात्य के हाथों में बिक गया है, या फिर आपकी रगों में बहते खून में जोश के हिमपात ने हृदय की धड़कनों को ठंडा कर दिया हो, या फिर आपके उमंग–उत्साह को झूठी दिलासा ने लम्बी तान में अरे हो जायेगा का अलार्म लगा कर सुला दिया है या फिर आपके फौलादी बाजुओं ने माया की बलवानी देख सरेन्डर कर दिया है।

मेरे भाई पाप अमावस्या के अँधेरे की तरह चारों ओर अपनी विकराल बाहें फैला चुका है, नियति ने भी पुण्य के उजाले का स्वीच ऑफ कर जैसे अनिरिचत अवकाश पर जा चुकी है, विश्वाश के सूर्य को जैसे पूर्वाग्रह के बादल ढकते जा रहे हों, मेरे भाई क्या आपकी बहनों के मासूम सवालों के आश्वाश्त करते जवाब आपके पास हैं या फिर आप मुँह फेर कर जाने या फिर ऑख बंद कर नहीं दिखाई दिया के बहाने ढूंढ़ते या फिर समाज ही ऐसा है मानकर अपने कर्तव्य को ताला लगा उनकी लास्ट उम्मीद को भी चकनाचूर कर रहे हैं, पर मेरे भाई तुम ऐसा नहीं कर सकते तुम महावीर का टाइटिल ले, विश्व सेवाधारी का खिताब ले, विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी ले, पवित्रता की अपार शक्ति लेकर भी अगर समाज में सुख शान्ति नहीं ला पाये तो भगवान का बनने का क्या फायदा! तो विश्व को स्वर्णिम बनाने का क्या औचित्य ! अमरनाथ के साथ अमर पद की प्राप्ति करने वाले मेरे भाई डायमण्ड युग के डायमण्ड जीवन लेकर पवित्रता का परिधान धारण कर परमशक्ति का अनवरत साथ लेने वाले, तो

क्या तुम्हारे रहते किसी निर्दोष, अबोध को अपना जीवन भार लगे। मेरा कहने का ये मन्तव्य बिल्कुल नहीं कि आप इस महामारी के समर में कूद जाओ। गुजरात का डाकू मान सिंह जिस एरिया में रहता था वहाँ की बहनें रात को भी बड़ी निश्चिन्तता एवं निर्भयता के साथ घर के बाहर भी अपना हर कार्य करते अपने जीवन का आनन्द लेती थी, जो कि कलियुग का एक डाकू था और आप जरा सोचो कि आप कौन हैं? मेरा तो निवेदन सिर्फ इतना है कि तुम ऐसा पवित्रता का सूर्य बनो कि आपके सानिध्य से जो भी गुजरे या आये तो उसके मन से भी विकारों का तम समाप्त होता जाये, जिससे उन्हें भी करने योग्य कर्मों की रोशनी मिल जाये, तुम ऐसा पवित्रता का निर्मल-निर्झर झरना बनो कि आस-पास से भी बुराइयों का ताप कम होता जाये, जिससे किसी भी बहन को किसी भी प्रकार का सेक न लगे, ये कार्य आपके लिए कोई बड़ी बात नहीं है, अगर आप नहीं करेंगें तो भला तुम्हीं बताओ और कौन करेगा? और अगर आपने अभी नहीं किया तो आगे फिर कभी नहीं कर सकेंगें ।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वाश है कि आप हमारी इस छोटी सी इल्तिजा को ठुकराएंगें नहीं, आपकी स्वीकृति की प्रतीक्षा में .....आपकी एक बहन ।

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम लखनऊ